# श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

## श्रीमृत्युञ्जयस्तोत्रम्,अर्धनारीश्वरस्तोत्रम्, उमामहेश्वरस्तोत्रम्

## शिव वंदना

**ॐ त्र्यम्बकं(यँ) यजामहे, सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।**

**उर्वारुकमिव बन्धनान्- मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥**

**अर्थात्–** हम त्रिनेत्र को पूजते हैं, जो सुगंधित हैं, हमारा पोषण करते हैं, जिस तरह फल, शाखा के बंधन से मुक्त हो जाता है,वैसे ही हम भी मृत्यु और नश्वरता से मुक्त हो जाएं।

**कर्पूरगौरं(ङ्) करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।**

**सदा वसन्तं हृदयारबिन्दे, भवं भवानीसहितं(न्) नमामि॥**

**अर्थात्–** जो कर्पूर जैसे गौर वर्ण वाले हैं, करुणा के अवतार हैं, संसार के सार हैं और भुजंगों का हार धारण करते हैं, वे भगवान शिव माता भवानी सहित मेरे हृदय में सदैव निवास करें और उन्हें मेरा नमन है।

## श्रीमृत्युञ्जयस्तोत्रम्

**रत्नसानुशरासनं रजताद्रिश्रृङ्गनिकेतनं,**

**शिञ्जिनीकृतपन्नगेश्वरमच्युतानलसायकम्।**

**क्षिप्रदग्धपुरत्रयं(न्) त्रिदशालयैरभिवन्दितं(ञ्),**

**चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं(ङ्) करिष्यति वै यम:॥1॥**

**अर्थात्–** कैलास के शिखर पर जिनका निवासगृह है, जिन्होंने मेरुगिरि का धनुष, नागराज वासुकि की प्रत्यंचा और भगवान् विष्णु को अग्निमय बाण बनाकर तत्काल ही दैत्यों के तीनों पुरों को दग्ध कर डाला था, सम्पूर्ण देवता जिनके चरणों की वन्दना करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

पञ्चपादपपुष्पगन्धिपदाम्बुजद्वयशोभितं,

भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहम्।

भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवमव्ययं(ञ्),

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं(ङ्) करिष्यति वै यम: ॥2॥

**अर्थात्–** मन्दार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन- इन पांच दिव्य वृक्षों के पुष्पों से सुगन्धित युगल चरण-कमल जिनकी शोभा बढ़ाते हैं, जिन्होंने अपने ललाटवर्ती नेत्र से प्रकट हुई आग की ज्वाला में कामदेव के शरीर को भस्म कर डाला था। जिनका श्रीविग्रह सदा भस्म से विभूषित रहता है, जो भव- सबकी उत्पत्ति के कारण होते हुए भी भव -संसार के नाशक हैं तथा जिनका कभी विनाश नहीं होता, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं,

पंकजासनपद्मलोचनपूजिताङ्घ्रिसरोरुहम्।

देवसिद्धतरंगिणीकरसिक्तशीतजटाधरं(ञ्),

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं(ङ्) करिष्यति वै यम:॥3॥

**अर्थात्–** जो मतवाले गजराज के मुख्य चर्म की चादर ओढ़े परम मनोहर जान पड़ते हैं, ब्रह्मा और विष्णु भी जिनके चरण कमलों की पूजा करते हैं तथा जो देवताओं और सिद्धों की नदी गंगा की तरंगों से भीगी हुई शीतल जटा धारण करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

कुण्डलीकृतकुण्डलीश्वरकुण्डलं(वँ) वृषवाहनं(न्),

नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।

अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं(ञ्),

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं(ङ्) करिष्यति वै यम:॥4॥

**अर्थात्–** गेडुल मारे हुए सर्पराज जिनके कानों में कुण्डल का काम देते हैं, जो वृषभ पर सवारी करते हैं, नारद आदि मुनीश्वर जिनके वैभव की स्तुति करते हैं, जो समस्त भुवनों के स्वामी, अन्धकासुर का नाश करने वाले, आश्रितजनों के लिए कल्पवृक्ष के समान और यमराज को भी शान्त करने वाले हैं, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

यक्षराजसखं भगाक्षिहरं भुजंगविभूषणं,

शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकलेवरम्।

क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं(ञ्),

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं(ङ्) करिष्यति वै यम:॥5॥

**अर्थात्–** जो यक्षराज कुबेर के सखा, भग देवता की आंख फोड़ने वाले और सर्पों के आभूषण धारण करने वाले हैं,जिनके श्रीविग्रह के सुन्दर वाम भागको गिरिराजकिशोरी उमा ने सुशोभित कर रखा है, कालकूट विष पीने के कारण जिनका कण्ठभाग नीले रंग का दिखाई देता है, जो एक हाथ में फरसा और दूसरे में मृग लिए रहते हैं, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता है। यमराज मेरा क्या करेगा ?

**भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं(न्),**

**दक्षयज्ञविनाशिनं(न्) त्रिगुणात्मकं(न्) त्रिविलोचनम्।**

**भुक्तिमुक्तिफलप्रदं(न्) निखिलाघसंघनिबर्हणं(ञ्),**

**चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं(ङ्) करिष्यति वै यमः॥6॥**

**अर्थात्–** जो जन्म-मरण के रोग से ग्रस्त पुरुषों के लिए औषध रूप हैं, समस्त आपत्तियों का निवारण और दक्ष यज्ञ का विनाश करने वाले हैं, सत्त्व आदि तीनों गुण जिनके स्वरूप हैं, जो तीन नेत्र धारण करते, भोग और मोक्षरूपी फल देते तथा संपूर्ण पाप राशि का संहार करते हैं, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

**भक्तवत्सलमर्चतां(न्) निधिमक्षयं हरिदम्बरं,**

**सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम्।**

**भूमिवारिनभोहुताशनसोमपालितस्वाकृतिं(ञ्),**

**चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं(ङ्) करिष्यति वै यमः॥7॥**

**अर्थात्–** जो भक्तों पर दया करने वाले हैं, अपनी पूजा करने वाले मनुष्यों के लिए अक्षय निधि होते हुए भी जो स्वयं दिगम्बर रहते हैं, जो सब भूतों (प्राणियों) के स्वामी, परात्पर, अप्रमेय और उपमारहित हैं, पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि और चन्द्रमा के द्वारा जिनका श्रीविग्रह सुरक्षित है, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

**विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं,**

**संहरन्तमथ प्रपञ्चमशेषलोकनिवासिनम्।**

**क्रीडयन्तमहर्निशं(ङ्) गणनाथयूथसमावृतं(ञ्),**

**चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं(ङ्) करिष्यति वै यमः॥8॥**

**अर्थात्–** जो ब्रह्मारूप से सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि करते, फिर विष्णु रूप से सबके पालन में संलग्न रहते और अन्त में सारे प्रपंच का संहार करते हैं। सम्पूर्ण लोकों में जिनका निवास है तथा जो गणेशजी के पार्षदों से घिरकर दिन-रात भांति-भांति के खेल किया करते हैं, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा ?

रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं(न्), नीलकण्ठमुमापतिम्।

नमामि शिरसा देवं(ङ्) , किं(न्) नो मृत्यु:(ख्) करिष्यति॥9॥

**अर्थात्–** 'रु'अर्थात् दु:ख को दूर करने के कारण जिन्हें रुद्र कहते हैं, जो जीवरूपी पशुओं का पालन करने से पशुपति, स्थिर होने से स्थाणु, गले में नीला चिह्न धारण करने से नीलकण्ठ और भगवती उमा के स्वामी होने से उमापति नाम धारण करते हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

कालकण्ठं(ङ्) कलामूर्तिं(ङ्) कालाग्निं(ङ्) कालनाशनम्।

नमामि शिरसा देवं(ङ्) , किं(न्) नो मृत्यु:(ख्) करिष्यति॥10॥

**अर्थात्–** जिनके गले में काला दाग है, जो कलामूर्ति, कालाग्निस्वरूप और काल के नाशक हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

नीलकण्ठं(वँ) विरूपाक्षं(न्) , निर्मलं(न्) निरुपद्रवम्।

नमामि शिरसा देवं(ङ्) , किं(न्) नो मृत्यु:(ख्) करिष्यति॥11॥

**अर्थात्–** जिनका कण्ठ नील और नेत्र विकराल होते हुए भी जो अत्यन्त निर्मल और उपद्रवरहित है, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

वामदेवं महादेवं(लँ), लोकनाथं(ञ्) जगद्गुरुम्।

नमामि शिरसा देवं(ङ्) , किं(न्) नो मृत्यु:(ख्) करिष्यति॥12॥

**अर्थात्–** जो वामदेव, महादेव, विश्वनाथ और जगद्गुरु नाम धारण करते हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?।।12।

देवदेवं(ञ्) जगन्नाथं(न्), देवेशमृषभध्वजम्।

नमामि शिरसा देवं(ङ्) , किं(न्) नो मृत्यु:(ख्) करिष्यति॥13॥

**अर्थात्–** जो देवताओं के भी आराध्यदेव, जगत के स्वामी और देवताओं पर भी शासन करने वाले हैं, जिनकी ध्वजा पर वृषभ का चिह्न बना हुआ है, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

अनन्तमव्ययं शान्त- मक्षमालाधरं हरम्।

नमामि शिरसा देवं(ङ्) , किं(न्) नो मृत्यु:(ख्) करिष्यति॥14॥

**अर्थात्–** जो अनन्त, अविकारी, शान्त, रुद्राक्ष मालाधारी और सबके दु:खों का हरण करने वाले हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

आनन्दं परमं(न्) नित्यं(ङ्), कैवल्यपदकारणम्।

नमामि शिरसा देवं(ङ्) , किं(न्) नो मृत्युः(ख्) करिष्यति॥15॥

**अर्थात्–** जो परमानन्दस्वरूप, नित्य एवं कैवल्यपद-मोक्ष प्राप्ति के कारण हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

स्वर्गापवर्गदातारं, सृष्टिस्थित्यन्तकारिणम्।

नमामि शिरसा देवं(ङ्) , किं(न्) नो मृत्युः(ख्) करिष्यति॥16॥

**अर्थात्–** जो स्वर्ग और मोक्ष के दाता तथा सृष्टि, पालन और संहार के कर्ता हैं, उन भगवान शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूं। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी ?

इति श्रीपद्ममहापुराणांतर्गत उत्तरखण्डे श्रीमृत्युञ्जयस्तोत्रम् संपूर्णम्॥

# अर्धनारीश्वरस्तोत्रम्

चाम्पेयगौरार्धशरीरकायै, कर्पूरगौरार्धशरीरकाय ।

धम्मिल्लकायै च जटाधराय, नमः(श्) शिवायै च नमः(श्) शिवाय ॥ 1॥

**अर्थात्–** आधे शरीर में चम्पापुष्पों-सी गोरी पार्वतीजी हैं और आधे शरीर में कर्पूर के समान गोरे भगवान शंकरजी सुशोभित हो रहे हैं । भगवान शंकर जटा धारण किये हैं और पार्वतीजी के सुन्दर केशपाश सुशोभित हो रहे हैं । ऐसी पार्वतीजी और भगवान शंकर को प्रणाम है।

कस्तूरिकाकुङ्कुमचर्चितायै, चितारजः(फ्)पुञ्जविचर्चिताय ।

कृतस्मरायै विकृतस्मराय, नमः(श्) शिवायै च नमः(श्) शिवाय ॥ 2॥

**अर्थात्–** पार्वतीजी के शरीर में कस्तूरी और कुंकुम का लेप लगा है और भगवान शंकर के शरीर में चिता-भस्म का पुंज लगा है । पार्वतीजी कामदेव को जिलाने वाली हैं और भगवान शंकर उसे नष्ट करने वाले हैं, ऐसी पार्वतीजी और भगवान शंकर को प्रणाम है।

चलत्कणत्कङ्कणनूपुरायै, पादाब्जराजत्फणिनूपुराय ।

हेमाङ्गदायै भुजगाङ्गदाय, नमः(श्) शिवायै च नमः(श्) शिवाय ॥ 3॥

**अर्थात्–** भगवती पार्वती के हाथों में कंकण और पैरों में नूपुरों की ध्वनि हो रही है तथा भगवान शंकर के हाथों और पैरों में सर्पों के फुफकार की ध्वनि हो रही है । पार्वती जी की भुजाओं में सुवर्ण के बाजूबन्द सुशोभित हो रहे हैं और भगवान शंकर की भुजाओं में सर्प सुशोभित हो रहे हैं । ऐसी पार्वतीजी और भगवान शंकर को प्रणाम है।

विशालनीलोत्पललोचनायै, विकासिपङ्केरुहलोचनाय ।

समेक्षणायै विषमेक्षणाय, नमः(श्) शिवायै च नमः(श्) शिवाय ॥ 4॥

**अर्थात्–** पार्वतीजी के नेत्र प्रफुल्लित नीले कमल के समान सुन्दर हैं और भगवान शंकर के नेत्र विकसित कमल के समान हैं । पार्वतीजी के दो सुन्दर नेत्र हैं और भगवान शंकर के (सूर्य, चन्द्रमा तथा अग्नि) तीन नेत्र हैं । ऐसी पार्वतीजी और भगवान शंकर को प्रणाम है।

मन्दारमालाकलितालकायै, कपालमालाङ्कितकन्धराय ।

दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय, नमः(श्) शिवायै च नमः(श्) शिवाय ॥ 5॥

**अर्थात्–** मन्दार-पुष्पों की माला भगवती पार्वती के केशपाशों में सुशोभित है और भगवान् शंकर के गले में मुण्डों की माला सुशोभित रही है। भगवती पार्वती के वस्त्र अति दिव्य हैं और भगवान शंकर दिगम्बर रूप में सुशोभित हो रहे हैं। ऐसी भगवती पार्वती और भगवान् शिव को नमस्कार है।

अम्भोधरश्यामलकुन्तलायै, तडित्प्रभाताम्रजटाधराय ।

निरीश्वरायै निखिलेश्वराय, नमः(श्) शिवायै च नमः(श्) शिवाय ॥ 6॥

**अर्थात्–** भगवती पार्वती केश जल से भरे काले मेघ के समान सुन्दर हैं और भगवान् शंकर की जटा विद्युत प्रभा के समान कुछ लालिमा लिये हुए चमकती दिखाई दे रही हैं। भगवती पार्वती परम स्वतन्त्र हैं अर्थात् उनसे बढ़कर कोई नहीं है और भगवान शंकर सम्पूर्ण जगत् के स्वामी हैं। ऐसी भगवती पार्वती और भगवान् शिव को नमस्कार है।

प्रपञ्चसृष्ट्युन्मुखलास्यकायै, समस्तसं(म्)हारकताण्डवाय ।

जगज्जनन्यै जगदेकपित्रे, नमः(श्) शिवायै च नमः(श्) शिवाय ॥ 7॥

**अर्थात्–** भगवती पार्वती लास्य (कोमल और मधुर) नृत्य करती हैं और उससे जगत् की रचना होती है और भगवान् शंकर का नृत्य सृष्टि-प्रपंच का संहारक है। भगवती पार्वती संसार की माता और भगवान् शंकर संसारके एकमात्र पिता हैं। ऐसी भगवती पार्वती और भगवान् शिव को नमस्कार है।

प्रदीप्तरत्नोज्ज्वलकुण्डलायै, स्फुरन्महापन्नगभूषणाय ।

शिवान्वितायै च शिवान्विताय, नमः(श्) शिवायै च नमः(श्) शिवाय ॥ 8॥

**अर्थात्–** भगवती पार्वती प्रदीप्त रत्नों के उज्ज्वल कुण्डल धारण की हुई हैं और भगवान् शंकर फूत्कार करते हुए महान् सर्पों का आभूषण धारण किये हैं। भगवती पार्वती भगवान शंकर की और भगवान् शंकर भगवती पार्वती की शक्ति से समन्वित हैं। ऐसी भगवती पार्वती और भगवान शिव को नमस्कार है।

एतत् पठेदष्टकमिष्टदं(यँ) यो, भक्त्या स मान्यो भुवि दीर्घजीवी ।

प्राप्नोति सौभाग्यमनन्तकालं(म्), भूयात् सदा तस्य समस्तसिद्धिः ॥ 9॥

**अर्थात्–** आठ श्लोकों का यह स्तोत्र इष्टसिद्धि करनेवाला है। जो व्यक्ति भक्तिपूर्वक इसका पाठ करता है, वह समस्त संसार में सम्मानित होता है और दीर्घजीवी बनता है, अनन्त काल के लिये सौभाग्य प्राप्त करता है एवं अनन्त काल के लिये सभी सिद्धियों से युक्त हो जाता है।

**इति श्रीमच्छं(ङ्)कराचार्यविरचितं अर्धनारीश्वरस्तोत्रम् सं(म्)पूर्णम् ॥**

# उमामहेश्वरस्तोत्रम्

**नमः(श्) शिवाभ्यां(न्) नवयौवनाभ्यां(म्),**

**परस्पराश्लिष्टवपुर्धराभ्याम् ।**

**नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्यां(न्),**

**नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 1॥**

**अर्थात्–** नवीन युवा अवस्था वाले, परस्पर आलिंगन से युक्त शरीर धारी, ऐसे शिव और शिवा को नमस्कार है , पर्वतराज हिमालय की कन्या और वृषभ चिह्नित ध्वज वाले शंकर - इन दोनों शंकर और पार्वती को मेरा बारंबार नमस्कार है।

**नमः(श्) शिवाभ्यां(म्) सरसोत्सवाभ्यां(न्),**

**नमस्कृताभीष्टवरप्रदाभ्याम् ।**

**नारायणेनार्चितपादुकाभ्यां(न्),**

**नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 2॥**

**अर्थात्–** महान आह्लादपूर्वक उत्सव में प्रवृत्त, नमस्कार करने मात्र से अभीष्ट वर देने वाले भगवान शिव और शिवा को नमस्कार है। श्री नारायण द्वारा जिनकी चरण पादुकाएं पूजित हैं ऐसे शंकर पार्वती को मेरा बारंबार नमस्कार है।

**नमः(श्) शिवाभ्यां(वँ) वृषवाहनाभ्यां(वँ),**

**विरिञ्चिविष्ण्विन्द्रसुपूजिताभ्याम् ।**

**विभूतिपाटीरविलेपनाभ्यां,**

**नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 3॥**

**अर्थात्–** वृषभ पर आसीन एवं ब्रह्मा ,विष्णु, इंद्र आदि प्रमुख देवों से सम्यक् पूजित शिव शिवा को मेरा प्रणाम है। विभूति और पाटीर आदि के अंगराग से लिप्त शंकर पार्वती को मेरा बार-बार नमस्कार है।

**नमः(श्) शिवाभ्यां(ञ्) जगदीश्वराभ्यां(ञ्),**

**जगत्पतिभ्यां(ञ्) जयविग्रहाभ्याम् ।**

जम्भारिमुख्यैरभिवन्दिताभ्यां(न्),

नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 4॥

**अर्थात्–** अखिल ब्रह्मांडनायक, जगत्पति , विजयरूप शरीरधारी शिव और शिवा को मेरा नमस्कार है । जंभ दैत्य के शत्रु इंद्र आदि प्रमुख देवों द्वारा नमस्कृत शंकर और पार्वती को मेरा बार-बार नमस्कार है।

नमः(श्) शिवाभ्यां(म्) परमौषधाभ्याम्,

पञ्चाक्षरीपञ्जररञ्जिताभ्याम् ।

प्रपञ्चसृष्टिस्थितिसं(म्)हृतिभ्यां(न्),

नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 5॥

**अर्थात्–** योगी जनों के लिए परम औषधि रूप नमः शिवाय इस पंचाक्षरी रूप पंजर से सुशोभित शिव और शिवा को मेरा नमस्कार है ।अखिल जगत प्रपंच - सृष्टि, स्थिति और संहार स्वरूप शंकर और पार्वती को मेरा बार-बार नमस्कार है।

नमः(श्) शिवाभ्यामतिसुन्दराभ्याम्,

अत्यन्तमासक्तहृदम्बुजाभ्याम् ।

अशेषलोकैकहितङ्कराभ्यां(न्),

नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 6॥

**अर्थात्–** अत्यंत सुंदर स्वरूप वाले अपने भक्तों के हृदय कमल में निवास करने वाले शिव और शिवा को मेरा नमस्कार है। समस्त चराचर जीवों के एक मात्र हित कारी शंकर और पार्वती को मेरा बार-बार नमस्कार है।

नमः(श्) शिवाभ्यां(ङ्) कलिनाशनाभ्यां(ङ्),

कङ्कालकल्याणवपुर्धराभ्याम् ।

कैलासशैलस्थितदेवताभ्यां(न्),

नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 7॥

**अर्थात्–** जो कलि के सभी दोषों के विनाशक हैं तथा जिस प्राणी के शरीर में मात्र हड्डियों का ढांचा रह गया हो ,ऐसे मृतप्राय प्राणी को जो तारक मंत्र द्वारा परम पद प्राप्त करने वाले हैं, ऐसे कैलाश पर्वत पर निवास करने वाले शंकर पार्वती को मेरा बार-बार नमस्कार है।

नमः(श्) शिवाभ्यामशुभापहाभ्याम्,

अशेषलोकैकविशेषिताभ्याम् ।

अकुण्ठिताभ्याम् स्मृतिसम्भृताभ्यां(न्)

नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 8॥

**अर्थात्–** अशुभों के विनाशक एवं समस्त लोकों में एकमात्र अद्वितीय शिव और शिवा को मेरा नमस्कार है । अबाधित शक्ति संपन्न और भक्तों का सदा स्मरण रखने वाले भगवान शंकर पार्वती को मेरा बारंबार नमस्कार है।

नमः(श्) शिवाभ्यां(म्) रथवाहनाभ्यां(म्),

रवीन्दुवैश्वानरलोचनाभ्याम् ।

राकाशशाङ्काभमुखाम्बुजाभ्यां(न्)

नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 9॥

**अर्थात्–** रथ रूपी वाहन पर स्थित , सूर्य- चंद्र -अग्नि रूप तीन नेत्र वाले शिव और शिवा को मेरा नमस्कार है। पूर्णिमा की रात के चंद्रमा की आभा के समान मुख कमल वाले शंकर पार्वती को मेरा बार-बार नमस्कार है।

नमः(श्) शिवाभ्यां(ञ्) जटिलन्धरभ्यां(ञ्),

जरामृतिभ्यां(ञ्) च विवर्जिताभ्याम् ।

जनार्दनाब्जोद्भवपूजिताभ्यां(न्),

नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 10॥

**अर्थात्–** जटाजूटधारी, वृद्धावस्था एवं मृत्यु से रहित शिव और शिवा को मेरा नमस्कार है । जनार्दन भगवान एवं ब्रह्मा जी द्वारा पूजित भगवान शंकर और देवी पार्वती को मेरा बार-बार नमस्कार है।

नमः(श्) शिवाभ्यां(वँ) विषमेक्षणाभ्यां(म्),

बिल्वच्छदामल्लिकदामभृद्भ्याम् ।

शोभावतीशान्तवतीश्वराभ्यां(न्),

नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 11॥

**अर्थात्–** त्रिनेत्रधारी , बिल्व पत्र तथा मालती आदि सुगंधित पुष्पों की माला धारण करने वाले शिव शिवा को मेरा नमस्कार है। शोभावती और शांतवती के ईश भगवान शंकर एवं पार्वती को मेरा बार-बार नमस्कार है।

नमः(श्) शिवाभ्यां(म्) पशुपालकाभ्यां(ञ्),

जगत्त्रयीरक्षणबद्धहृद्भ्याम् ।

**समस्तदेवासुरपूजिताभ्यां(न्),**

**नमो नमः(श्) शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ 12॥**

**अर्थात्– समस्त प्राणियों का पालन पोषण करने तथा तीनों लोकों की रक्षा करने में जिनका हृदय निरंतर लगा हुआ है,ऐसे शिव शिवा को मेरा नमस्कार है। समस्त देवों तथा असुरों द्वारा पूजित शंकर और पार्वती को मेरा बार-बार नमस्कार है।**

**स्तोत्रं(न्) त्रिसन्ध्यं(म्) शिवपार्वतीभ्यां(म्),**

**भक्त्या पठेद् द्वादशकं(न्) नरो यः ।**

**स सर्वसौभाग्यफलानि भुङ्क्ते,**

**शतायुरन्ते शिवलोकमेति ॥ 13॥**

**अर्थात्– जो प्राणी अत्यंत श्रद्धा -भक्ति पूर्वक शिव और पार्वती -संबंधी 12 श्लोक वाले इस स्तोत्र का प्रातः , मध्याह्न और सायं काल पाठ करता है , वह 100 वर्ष पर्यंत जीवन धारण कर सभी सौभाग्य फलों का उपभोग करता है और अंत में शिवलोक को प्राप्त होता है।**

**इति श्रीमत्छङ्कराचार्यविरचितम् उमामहेश्वरस्तोत्रं(म्) सम्पूर्णम् ॥**